RNI N.UPHIN/2014/54590

कला, साहित्य और संस्कृति की धरोहर

जनवरी–मार्च: 2016

मानव संस्कृति

₹25/-

57वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी

शरदोत्सव 16

30 और 31 जनवरी को मुम्बई के वर्सोवा में एक अनोखे पुस्तक मेले का आयोजन हुआ। व्यंग्यऋषि श्री शरद जोशी जी के 85वें जन्मदिवस वर्ष पर आयोजित 'शरदोत्सव 16' में दिल्ली, मुम्बई के प्रकाशक–एन.बी.टी, राजकमल, किताबघर, किताबवाले, इमेज पब्लिकेशन इत्यादि के अलावा दोनों दिन साहित्य से जुड़े कई कार्यक्रम हुए। कमलेश पाण्डेय, अचला नागर, सुशांत सिंह, चेतन पंडित, कंवलजीत, ललित परिमु सहित नादिरा जहीर बब्बर, सीमा पाहवा, प्रीता माथुर ठाकुर और शैली सथ्यू ने अपने–अपने ग्रुप से विभिन्न प्रस्तुति दीं। लगभग 40 कलाकार और 30–35 प्रमुख लेखकों, कलाकारों और सहित्य प्रेमियों ने एक साथ मिलकर दोनों दिन इस मेले का भरपूर आनंद लिया।

मानव संस्कृति आर.एन.आई. संख्या UPHIN/2014/54590

कला, साहित्य और संस्कृति की धरोहर वर्ष 3: अंक 1

इस अंक में

संरक्षक
राजीव तिवारी

प्रधान संपादक
राजीव शर्मा

संपादक
शीला शर्मा
सुधीर शर्मा

आवरण
Alik Assatrain
विधिक परामर्शदाता
अनुपम

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय
एस.एस. 172 सेक्टर एन. 1
अलीगंज लखनऊ-226024, उ.प्र.
मोबाइल : 09452376528
ईमेल :
manavsanskriti.lko@gmail.com

एक प्रति : 25/- रुपए
वार्षिक सदस्यता : 200/-रुपए
द्विवार्षिक सदस्यता : 400/-रुपए
त्रिवार्षिक सदस्यता : 600/-रुपए
आजीवन सदस्यता : 2000/-रुपए

आजीवन सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'मानव संस्कृति' (Manav Sanskriti) के नाम से निम्न पते पर भेजें-एस.एस.172, सेक्टर एन-1, अलीगंज, लखनऊ-226024 (उत्तर प्रदेश)

सौमित्र मोहन

प्रसिद्ध चित्रकार अकबर पद्मसी की अवनी दोषी से विस्तृत बातचीत के महत्वपूर्ण अंश। अनुवाद चर्चित कला समीक्षक और कवि सौमित्र मोहन द्वारा

सुधीर शर्मा

मूर्तिकार, चित्रकार, कला समीक्षक सुधीर शर्मा के शोधग्रन्थ 'भारत में संस्थापन कला : उद्भव विकास एवं वर्तमान स्वरूप' के अंश

काव्य पाठ

बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे और अन्य कविताएं
(वरिष्ठ कवि राम दरश मिश्र की कविताएं) **- राम दरश मिश्र** **4**

चित्रकला

अकबर पद्मसी :
एक आधुनिकतावादी की कलायात्रा को खोजने की कोशिश
(अनुवाद : प्रसिद्ध कला चिंतक और कवि सौमित्र मोहन द्वारा) **- सौमित्र मोहन** **6**

संस्थापन कला

भारत में संस्थापन कला : एक अध्ययन **- सुधीर शर्मा** **11**
(भारत में संस्थापन कला : सुधीर शर्मा का शोध कार्य)

गैलरी

लखनऊ आर्ट कालेज के 10 मूर्तिकार
(कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ से जुड़े कलाकार) **- सुधीर शर्मा/राजीव शर्मा** **16**

मूर्तिकला

मुकुल पँवार के मूर्तिशिल्प
(मुकुल पँवार के मूर्तिशिल्पों पर नेहा बसेड़ा का आलेख) **- नेहा बसेड़ा** **26**

चित्रकला

अवशेषों के रहस्यात्मक सौन्दर्य की खोज

(युवा चित्रकार उमेन्द्र के कलाकर्म पर शेफाली भटनागर का आलेख) **- शेफाली भटनागर** **30**

मैं मिटूँगा नहीं मेरे शहर की दीवारों

रवि नागर : स्वप्न मरता नहीं

(रवि नागर को याद करते हुए पंकज निगम का मर्मस्पर्शी संस्मरण) **- पंकज निगम** **33**

राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी

(राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी पर सुधीर शर्मा की संक्षिप्त टिप्पणी) **- सुधीर शर्मा** **36**

रंगमंच

(प्रेमचन्द्र और भीष्म साहनी की कहानियों पर हिन्दू कालेज-दिल्ली से शशांक द्विवेदी) **- शशांक द्विवेदी** **37**

समूह प्रदर्शनी

(लखनऊ में 6 युवा कलाकारों की समूह प्रदर्शनी पर सुधीर शर्मा की टिप्पणी) **- सुधीर शर्मा** **37**

सेमिनार

अखिलेश के कृतित्व पर सेमिनार

(चर्चित कथाकार अखिलेश के कृतित्व पर राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट) **- डॉ. कनक जैन** **38**

दिव्य लोक

लखनऊ नवाबों का शहर

(वरिष्ठ व चर्चित लेखिका वीना शर्मा की मशहूर किताब 'दिव्यलोक' से) **- वीना शर्मा** **39**

उर्दू अदब

बी.ए. की लम्बी पारी

(वरिष्ठ पत्रकार और कहानीकार आबिद सुहैल की आत्मकथा 'जो याद रहा' से) **- आबिद सुहैल** **41**

सूफीज़्म

मेरा शाह तेरा शाह बुल्ले शाह

(प्रसिद्ध सूफी संत बुल्ले शाह को याद करते हुए) **- फिरदौस खान** **48**

नई किताब

प्रेमचन्द कहानी कोश

(चर्चित विद्वान कमल किशोर गोयनका द्वारा सम्पादित किताब की समीक्षा) **- कृष्णवीर सिकरवार** **51**

पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादस्पद मामले लखनऊ न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक है।

मानव संस्कृति की स्वात्वधिकारी मुद्रक एवं प्रकाशक शीला शर्मा के लिए नमन प्रकाशन, चिन्टल हाउस, लखनऊ से मुद्रित तथा एस.एस.-172, सेक्टर एन-1 अलीगंज, लखनऊ से प्रकाशित।

संपादकीय

: राजीव शर्मा

11 वर्षों के बाद राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का आयोजन प्रदेश की राजधानी लखनऊ में होना कला के वातावरण को रचता हुआ एक सुखद अहसास है। युवा रचनाकारों की सृजनात्मक क्षमताओं का चाक्षुस अनुभव तमाम नई उम्मीदें पैदा करता है। पुरस्कृत 15 कलाकारों में उत्तर प्रदेश के दो युवा रचनाकारों का शामिल होना इस आयोजन को और खास बना गया। राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में चयनित सभी कलाकारों के लिए एक कला शिविर के आयोजन ने इसे विस्तृत और बहुआयामी आकार दिया। कलाकारों के लिए यह शिविर सहभागी स्वरूप में स्वयं अपनी सृजनात्मक क्षमताओं का आकलन और आदान-प्रदान का उत्साहजनक केंद्र था। छात्र कलाकारों और कला जिज्ञासुओं के मध्य भी आयोजन पर चर्चा, टिप्पणी का उत्साही दौर अभी जारी है।

इस बार **काव्य पाठ** में वरिष्ठ सृजनकर्मी, कहानीकार, उपन्यासकार निबन्धकार, ग़ज़लकार और बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी राम दरश मिश्र जी की कविताएं प्रस्तुत की जा रही हैं। जबकि **चित्रकला** में चित्रकार अकबर पदमसी से अवनी दोषी की हुई विस्तृत और सारगर्भित बातचीत का अनुवाद किया है प्रसिद्ध कला चिन्तक और कवि सौमित्र मोहन ने। **संस्थापन कला** में इस बार मूर्तिकार, चित्रकार, कला समीक्षक सुधीर शर्मा के शोधग्रन्थ 'भारत में संस्थापन कला : उद्भव विकास एवं वर्तमान स्वरूप' के अंश प्रस्तुत किए जा रहे हैं, विचारोत्तेजक होने के साथ ही यह संस्थापन के नए आयाम भी खोलता है।

गौरतलब है कि कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ का एक अपना गरिममयी इतिहास रहा है। महाविद्यालय से जुड़ी तमाम विभूतियों में से 10 मूर्तिकारों के बारे में संक्षिप्त जानकारियाँ इस बार की **गैलरी** में प्रस्तुत की जा रही हैं। जबकि प्रसिद्ध मूर्तिकार मुकुल पंवार के कलाकर्म का अध्ययन और विवेचन करता शोधपरक आलेख है विजुअल आर्ट प्रभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान से जुड़ी कलाछात्रा कु. नेहा बसेड़ा का। मुकुल पंवार के शिल्पगत सौन्दर्य, माध्यम की तकनीकी समझ तथा विषय से उसकी बाध्यता को लेख के जरिए समझा-परखा जा सकता है।

मानव संस्कृति का पिछला अंक रवि नागर केन्द्रित था। समयाभाव के कारण रवि नागर पर जिनका लिखा हम तक नहीं पहुँच पाया, उन्हें निरन्तर अगले अंकों में प्रकाशित करने की बात कही गयी थी। इस अंक में रवि नागर पर चर्चित युवा चित्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता पंकज निगम के मर्मस्पर्शी संस्मरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं। यह आलेख पंकज निगम की लेखकीय क्षमता को भी बखूबी उजागर करता है।

वरिष्ठ लेखिका शेफाली भटनागर ने युवा चित्रकार उमेन्द्र प्रताप सिंह की चित्रकला की रहस्यमयता को तो उजागर किया ही है साथ ही पाठकों का परिचय उनके जीवन से भी कराया है।

ललित कला केंद्र, अलीगंज-लखनऊ में सम्पन्न राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी के बारे में सुधीर शर्मा की टिप्पणी प्रदर्शनी की अहम जानकारियों को संजोए है। 'मन्थन' नामक ग्रुप के अंतर्गत राष्ट्रीय ललित कला अकादेमी, अलीगंज-लखनऊ की कला वीथिका में आयोजित 6 युवा कलाकारों की सामूहिक चित्रकला प्रदर्शनी में कलाकारों की रचनात्मकता क्षमताओं पर चर्चा भी महत्वपूर्ण है। लखनऊ के विख्यात हिन्दी कथाकार अखिलेश पर 'समकालीन परिदृश्य और अखिलेश का साहित्य' विषयक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन चित्तौड़गढ़-राजस्थान में संभावना संस्थान द्वारा आयोजित हुआ। सेमिनार पर विस्तृत रिपार्ट पेश की है डॉ. कनक जैन ने। डॉ. जैन संयोजक संगोष्ठी भी हैं।

फिल्मों के मशहूर चरित्र अभिनेता स्व. निरंजन शर्मा की सुपुत्री, वीना शर्मा जिन्होंने भारतीय फिल्म जगत को गरिमामयी नाम 'दिव्य लोक' दिया, का लेख लखनऊ पर केंद्रित है। सुखद संयोग है कि सुश्री वीना शर्मा का लखनऊ से गहरा ताल्लुक है।

अत्यन्त दुःख की बात है कि वरिष्ठ पत्रकार, कहानीकार श्री आबिद सुहैल जी अब हमारे बीच मौजूद नहीं है। पिछले वर्ष उनका देहांत हो गया। देहांत से कुछ महीनों पहले ही उन्होंने अपनी आत्मकथा 'जो याद रहा' का लोकार्पण किया था। इस अंक में 'जो याद रहा' के चुने हुए अंश प्रस्तुत हैं।

सूफी संत बुल्ले शाह को स्मरण करते हुए फिरदौस खान ने उनकी अमूल्य रचनाओं को भी अपने लेख में प्रस्तुत किया। हिन्दी विभूति डॉ. कमल किशोर गोयनका द्वारा सम्पादित 'प्रेमचन्द कहानीकोश' गोयनका जी के परिश्रम की कथा है। इसकी समीक्षा की राजस्थान से कृष्णवीर सिकरवार ने।

अंततः पत्रिका के बारे में अपने विचार जरूर प्रेषित करें। पत्रिका का ईमेल-manavsanskriti.lko@gmail.com है....

राजीव शर्मा

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी वयोवृद्ध सृजनकर्मी रामदरश मिश्र का जन्म 15 अगस्त 1924 को गोरखपुर जनपद (उ.प्र.) के गाँव डुमरी में हुआ। हाल-फिलहाल उनके नवीनतम काव्य संग्रह 'आग की हँसी' को साहित्य अकादमी सम्मान से विभूषित किया गया है। उनके अन्य चर्चित ग्रन्थ हैं-

काव्य संग्रह : 'बैरंग-बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गयी है धूप', 'कंधे पर सूरज', 'दिन एक नदी बन गया', 'जुलूस कहाँ जा रहा है', 'आग कुछ नहीं बोलती', 'बारिश में भीगते बच्चे' और 'हंसी ओठ पर आँखें नम हैं', (गजल संग्रह)- 'ऐसे में जब कभी', 'आग की हँसी'।

कहानी संग्रह : खाली घर, एक वह, दिनचर्या, सर्पदंश, वसंत का एक दिन, अपने लिए, आज का दिन भी, फिर कब आएँगे?, एक कहानी लगातार, विदूषक, दिन के साथ, विरासत।

उपन्यास : पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, बीच का समय, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, रात का सफर, आकाश की छत, आदिम राग, बिना दरवाजे का मकान, दूसरा घर, थकी हुई सुबह, बीस बरस, परिवार।-राजीव शर्मा

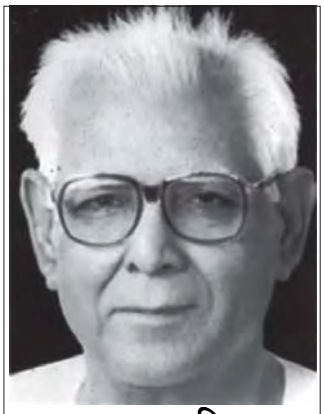

राम दरश मिश्र

वरिष्ठ सृजनकर्मी, कहानीकार, उपन्यासकार निबन्धकार, ग़ज़लकार। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी।

उम्र की दूर दिशा से

आज उम्र की दूर दिशा से
सावन की वातास आ रही
जिन-जिन फूलों से गुजरा
उन-उन फूलों की वास आ रही!

निकला था मैं सालों पहले
घर से गठरी लिए सफर की
कुछ अरूप सपने भविष्य के
कुछ गाढ़ी यादें थीं घर की

आज न जाने कहाँ-कहाँ की दूरी
मेरे पास आ रही!

बहते हुए शहर के पथ पर
आँखें सहसा अट जाती थीं
धूल-भरी आकृतियाँ कुछ
गाँव की दिखाई पड़ जाती थीं

उमड़-उमड़ अब भी अंतरतम् में
बचपन की प्यास आ रही!

चलता गया, राह में आए
कितने नए-नए चौराहे
पाता गया न जाने कितना
कुछ नूतन चाहे-अनचाहे

यादों में कुछ पेड़ पिता-से,
भीगी माँ-सी घास आ रही!

साथ समय के चलते-चलते
कितना दूर निकल आया मैं
फिर भी रह-रहकर लगता
ओ गाँव, तुम्हारा ही साया मैं

मेरी इन शहरी साँसों में
उन खेतों की साँस आ रही!